ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

परोऽपेहि मनस्पाप। अथर्ववेद-6/45/1
ओ मेरे मन के पाप! तू मुझसे दूर भाग जा।
O the vice in my mind! Leave me and go far away.

वर्ष 39, अंक 5 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 7 दिसम्बर, 2015 से रविवार 13 दिसम्बर, 2015
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्दः 192 वार्षिक शुल्कः 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में आर्य प्रतिनिधि सभा आस्ट्रेलिया द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2015 आस्ट्रेलिया सम्पन्न

12देशों के प्रतिनिधियों ने लिया भाग: 3 लघु भारत का प्रतिनिधित्व रहा चर्चा का विषय-फिजी, सूरीनाम और मारिशस

क्षेत्रीय सम्मेलनों का सिलसिला शुरू-2016 में न्यूजीलैंड, 2017 में फिजी और 2018 में ब्रिसबेन सम्मेलन का प्रस्ताव

दक्षिण प्रशांत क्षेत्र की समस्त आर्य संस्थाएं आईं एक मंच पर

आर्य समाज के बहुउद्देशीय प्रशिक्षण केन्द्र की आवश्यकता को गहराई से किया गया महसूस

सिद्धांत-संगठन और क्षेत्रिय समस्याओं पर भी हुई विषयपरक चर्चा

आर्यजनों की परिवार सहित उपस्थिति ने बढ़ाई कार्यक्रम की शोभा

आर्य समाज की अपनी भूमि पर हुआ सम्मेलन

आर्य समाज के पुनर्स्थापन की गौरवमयी परम्परा का सफल आयोजन आस्ट्रेलिया के प्रमुख शहर सिडनी में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन के आयोजन को लेकर प्रारंभ में आस्ट्रेलिया आर्य प्रतिनिधि सभा के मन में अनेक संशय व कार्य को भव्य स्वरूप दे पाने की भावना थी। इसका सबसे बड़ा कारण इस प्रकार का कार्यक्रम पूर्व में कभी सम्पन्न हुआ ही नहीं। ऐसा सम्मेलन करने की तो दूर उसकी स्वप्न में भी सोच नहीं थी।

प्रशांत क्षेत्र के सभी बड़े शहरों में आर्य समाज की ईकाई का हुआ गठन

बिना हलवाई एवं कैट्र्स के आयोजित हुआ संभवतः पहला सम्मेलन - विभिन्न आर्य समाजों की इकाईयों ने निभाई भोजन बनाने एवं वितरण करने की जिम्मेदारियां

किन्तु जो कार्यक्रम हुआ उसने सबको स्वयं आयोजकों को आश्चर्य चकित कर दिया। सार्वदेशिक सभा के प्रत्यक्ष सम्पर्क से वर्षो से दूर इस देश में आर्य समाज का संगठन था।

...शेष पेज 4 पर

12वां आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन सम्पन्न

महर्षि दयानन्द की वैवाहिक मान्यताओं का मूर्तरुप हैं ये सम्मेलन

महर्षि दयानन्द की वैवाहिक मान्यताओं का मूर्तरूप है सम्मेलन ये आर्य परिवार युवक-युवती परिचय सम्मेलन। उक्त विचार कार्यक्रम के मुख्य सचिव एवं राष्ट्रीय संयोजक श्री अर्जुनदेव चड्ढा ने नई दिल्ली में आयोजित 12वें आर्य परिवार युवक-युवती परिचय सम्मेलन के अवसर पर व्यक्त किये।

6 दिसम्बर 2015 रविवार को आर्य समाज मंदिर हनुमान रोड में आयोजित परिचय सम्मेलन के उद्घाटन के अवसर पर श्री चड्ढा जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द की वेदानुकूल वैवाहिक विचारधारा रही है। इस को आगे बढ़ाने का आर्य समाज का पुनीत कार्य है।

कार्यक्रम का प्रारंभ प्रातः 10 बजे ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना के मंत्रोच्चारण

...शेष पेज 5 पर

स्वाध्याय

प्रभु की प्राप्ति

सदा व इन्द्रश्चर्कृषदा उपो नु स सपर्यन्। न देवा वृत: शूर इन्द्र:।।
-साम. पू. 3/1//1/3
ऋषि:-प्रगाथ: काण्व:।। देवता-इन्द्र:।। छन्द:-गायत्री।।

विनय- हे मनुष्यों! तुम अपने परमात्मा से प्रेम क्यों नहीं करते? जहां हरिकथा होती है वहां से तुम भाग आते हो। बार-बार प्रभु-चर्चा होती देखकर तुम ऊबते हो, जबकि विषयों की चर्चाएं सुनने के लिए सदा लालयित रहते हो। तुम्हें उस अपने पिता से इतना हटाव क्यों है? तुम चाहे जो करो, वह देव तो तुम्हें कभी भुला नहीं सकता। वह तो तुम्हें प्रेम से अपनी ओर आकर्षित ही कर रहा है, सदा आकर्षित कर रहा है, निरन्तर अपनी ओर खींच रहा है। तुम जानो या न जानो, पर वह अत्यन्त समीपता के साथ माता की भांति तुम-पुत्रों की निरंतर परिचर्या भी कर रहा है। वह परमेश्वर हमारे रोम-रोम में रमा हुआ, हमारे एक-एक श्वास के साथ आता-जाता हुआ, हमारे मन के एक-एक चिन्तन के साथ तद्रूप हुआ-हुआ और क्या कहें, हमारी आत्मा-की-आत्मा होकर, एक अकल्पनीय एकता के साथ हमसे जुड़ा हुआ है। हमें संसार में जो कुछ प्रेम, आराम, वात्सल्य, भोग, सेवा, सुख मिल रहा है वह किन्हीं इष्ट-मित्रों या प्राकृतिक वस्तुओं से नहीं मिल रहा है, वह सब हमारे उस एक अनन्य सम्बन्धी परम दयालु प्रभु से ही मिल रहा है। वह केवल हमें अपनी ओर खींच ही नहीं रहा है, अपितु अति समीपता से निरंतर हमारी सेवा भी कर रहा है, प्रेम-प्रेरित होकर हमारी सेवा कर रहा है, हमारा पालन, पोषण, रक्षण, दु:खनिवारण आदि सब परिचर्या कर रहा है। अरे! वह तो कहीं छिपा हुआ भी नहीं है। उसके और हमारे बीच में कोई भी आवरण नहीं है। उसे ढका हुआ, आच्छादित भी कौन कहता है?

हे मनुष्यों! सच बात तो यह है कि यदि हम उसके इस प्रेमाकर्षण को जानने लग जाएं-वे प्रभुदेव सदा प्रेम से हमें अपनी ओर खींच रहे हैं, यह हम सचमुच अनुभव करने लग जाएं, तो हमें यह भी दखी जाए कि वे हमारे अत्यंन्त निकट हैं और अत्यन्त निकटता के साथ हमारी सेवा-शुश्रूषा कर रहे हैं और फिर एक दिन हमें यह भी दिख जाए कि वे सब ब्रह्माण्ड के रचयिता महापराक्रमी इन्द्र प्रभु-जिनके विषय में परोक्षतया हम इतनी बाते सुना करते थे, वे-हमसे किसी आवरण से ढके हुए भी नहीं हैं। वे प्रत्यक्ष हमारे सामने हैं और यह दीख जाना ही परमात्मा का साक्षात्कार करना है, परम प्रभु को पा लेना है।

शब्दार्थ-हे मनुष्यों! **इन्द्र:**-परमेश्वर **व:**-तुम्हें **सदा**-सदैव **आचर्कृषत्**-अपनी ओर आकर्षि कर रहा है **स:**-वह **नु**- नि:सन्देह **उप उ**-समीप ही, समीपता के साथ **सपर्यन्**- तुम्हारी सेवा करता हुआ विद्यमान है। **शूर: इन्द्र: देव:**- वह महापराक्रमी इन्द्रदेव **वृत:**-ढका हुआ, आच्छादित **न**-नहीं है।

साभार : वैदिक विनय

पुस्तक प्राप्ति के लिए वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

सम्पादकीय

भगवान की फोटो का यह प्रयोग?

अनपढ़, अंधविश्वासी और धर्मभीरु अधिकांश जनता को धर्म और भगवान के नाम पर नेता और पाखंडी तो लूटते देखे सुने थे! लेकिन अब दीवारों की रक्षा करते भगवान भी सबने देख लिए। ज्यों-ज्यों देश और समाज आगे बढ़ रहा है धर्म और संस्कृति लुटती पीटती नजर आ रही है। जहाँ भगवान का अनुग्रह पाने के लिए भगवान की कृपा पाने के लिए आधुनिक अमीर लोग मंदिरों में चढ़ावा चढ़ा रहे है वहीं कुछ लोग अपने मकान दुकान की दीवारों पर गणेश, शिव, हनुमान आदि के चित्र चिपका कर उन लोगों को डरा रहे हैं जो राह चलते दीवारों सड़कों के किनारे मल मूत्र त्याग कर देते है। आखिर यह कैसा भय है? या ये कहो जिन्हें आप अपना भगवान कहते हो उनके साथ कैसा व्यवहार कर रहे हो? मर्यादा के सारे मंजर खंडित कर दिए! इसमें हम दो बाते कहना चाहते है एक तो वो लोग ही गलत है जो इस तरह के कृत्य कर देश में गंदगी फैलाते है दूसरा उनसे भी प्रश्न है कि आप लोग अपने महापुरुषों का इस तरह अपमान क्यों कर रहे हैं?

इसी कड़ी में कुछ आगे बढ़े तो धर्म और आस्था के नाम पर बड़े-बड़े पढ़े लिखों को इसका शिकार होते देखा है, चमत्कारी बाबाओं और और तथाकथित भगवानों द्वारा महिलाओं के शोषण की बातें हमेशा से प्रकाश में आती रही हैं, लेकिन अब इस प्रकार भगवान का उपयोग करना उन लोगों की आस्था पर प्रश्न चिन्ह जरूर खड़ा करता है हमारा यह भटका हुआ समाज है जो किरदार की जगह चमत्कारों से भगवान् को पहचानने की गलती किया करता है। कुछ लोग सोच रहे होंगे आर्य समाज से जुड़े होकर महर्षि देव दयानन्द के अनुयायी होकर ये क्या विषय लेकर बैठ गये पर हम बता दे आर्य समाज कोई धर्म या जाति नहीं वो सामाजिक चेतना की क्रांति का नाम हैं एक आन्दोलन है जिसका उद्देश्य लोगों में जागृति पैदा करना है। जो सुबह उठकर मर्यादा पुरुषोतम राम और योगिराज श्री कृष्ण जी महाराज की आराधना करते हैं। लोग इनके चित्रों को दीवारों पर चिपका नीचे लिख देते है कि यहाँ पेशाब न करें भगवान देख रहे है मुझे ये शब्द लिखने में शर्म आ रही है आपको पढ़ने में शर्म आएगी किन्तु हमारा देश कितना भी अपने आप को सामाजिक रूप से स्वस्थ समझता हो पर यह बीमारी बहुत अन्दर तक फैल चुकी है, इस वजह से आर्य समाज धार्मिक शिक्षा के साथ सामाजिक शिक्षा का पक्षधर रहा है। पहले इस समाज को समझो इसके अन्दर रहना सीखो फिर इसके बाद ही धार्मिक शिक्षा सफल होगी?

लेकिन आज चारों तरफ सफल लोगों की जिंदगियां तो देखो, इनसे ज्यादा असफल जीवन और कहां मिलेंगे! धन तो इकट्ठा हो जाता है, किन्तु भीतर अज्ञानता की निर्धनता है। बाहर तो अच्छा पद हैं और भीतर भिखमंगा बैठा है। हाथ तो हीरों से भरे हैं, आत्मा अन्धविश्वास के कूडे -कर्कट से भरी होती है। यदि आज समाज अच्छी चीजें ग्रहण करने के पक्ष में खड़ा हो जाये तो हमें दीवारों पर इन महापुरुषों की तस्वीर चिपका कर ये भद्दे स्लोगन ना लिखने पड़ेगे किन्तु आज समाज ऐसे ही अभ्यस्त हो गया है असत्य के लिये, अशुभ के लिये तब चाहकर भी शुभ और सुंदर का जन्म मुश्किल हो जाता है..अपने ही हाथों से हम स्वयं को अपने समाज को रोज अधार्मिकता में जकड़ते जाते हैं। और जितनी हमारी जकड़न होती है उतना ही सत्य हमसे दूर हो जाता है। हमारे प्रत्येक भाव विचार और कर्म हमें निर्मित करते हैं। उन सबका समग्र जोड़ ही हमारा होना है। इसलिए जिसे सत्य साफ स्वच्छ के शिखर को छूना है उसे ध्यान देना होगा कि जिस तरह एक रुमाल से एक विवाहित नारी सिर और चेहरा नहीं ढक सकती उसी तरह क्या एक चित्र आपके मंदिर और दीवार दोनों जगह शोभा दे सकते हैं? कोई भी महापुरुष पूजा के लिए या रक्षा के लिए पैदा नहीं होता उनके विचार होते है जिन पर चलकर समाज उन्नति करता है यदि आप उनसे अपनी दीवारों की सीलन हटवाना चाहते हो तो कहीं न कहीं उनके विचारों की हत्या करना है या ये कहो कि भगवान को याद करने का यह तरीका गलत है। **-सम्पादकीय**

ग्रन्थ परिचय

भ्रमोच्छेदन

प्रश्न 1. क्या भ्रमोच्छेदन भी महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित किसी ग्रन्थ का नाम है?

उत्तर: जी हां, 'भ्रमोच्छेदन' नामक ग्रन्थ भी महर्षि दयानन्द द्वारा लिया गया था।

प्रश्न 2: यह ग्रन्थ महर्षि ने कब लिखा था?

उत्तर : जी हां, 'भ्रमोच्छेदन' नामक ग्रन्थ भी महर्षि दयानन्द ने संवत् 1937, ज्येष्ठ मास के कृष्ण पक्ष की द्वितीया तिथि गुरुवार को पूर्ण किया।

प्रश्न 3: यह किस भाषा में लिखा गया?

उत्तर : यह हिन्दी भाषा में लिखा गया ग्रन्थ है।

प्रश्न 4: इसमें किस प्रकार के भ्रम को दूर करने का प्रयास किया गया है?

उत्तर : स्वामी दयानन्द जी के अपने शब्दों में ही, ''अब जो राजा शिवप्रसाद जी ने स्वामी विशुद्धानन्द जी की सम्मति लिखी, ज्येष्ठ महीने में, निवेदन पत्र छपवा के प्रसिद्ध किया है, उसी के उत्तर में यह पुस्तक है।''

प्रश्न 6 : ऐसा माना जाता है कि राजा शिवप्रसाद विद्वान् थे?

उत्तर : स्वामी दयानन्द जी की भी पहले यही धारणा थी और वे उनसे मिलना भी चाहते थे, परन्तु एक बार संवत् 1926, कार्तिक सुदी 14, गुरुवार के दिन अचानक कुछ समय के लिए स्वामी जी की उनसे बात हुई तो उनकी धारणा बदली। उनके शब्दों में, ''परन्तु शोक है कि जेसा मेरा प्रथम निश्चय राजा जी पर था वैसा उनको न पाया। राजा जी की वाचालता बहुत बड़ी और समझ अति छोटी देखी है।''

प्रश्न 7: फिर कम समझ वाले के लिए इस ग्रन्थ की क्या उपयोगिता है?

उत्तर : वस्तुत: स्वामी जी इसके माध्यम से स्वामी विशुद्धानन्द जी को चेताना चाहते थे। उनके अनुसार, राजा जी तो संस्कृत विद्या पढ़े ही नहीं तो उनके सामने यह लेख तो ऐसा ही है जैसे बहरे के सामने अतयन्त निपुण गाने वाले का वीणा आदि बजाना।

महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय (प्रश्नोत्तरी)

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें। -मो. 09540040339

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा
के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36-16	मुदित मूल्य 50 रु. प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36-16	मुदित मूल्य 80 रु. प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30-8	मुदित मूल्य 150 रु.	प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

प्रजातंत्र में वैदिक शिक्षा

...जब देश स्वतन्त्र हुआ हर किसी के हृदय में देश प्रेम की भावना थी उस समय हमारी भावनाएं उतनी कुत्सित न थीं अतः कोई भी जो भारत का नागरिक हो चुनाव लड़ सकता था। अब इस विषय पर बैठकर विचार करने की आवश्यकता है। ऋषि दयानन्द ने तो छठे समुल्लास में स्पष्ट कहा है कि राजा वही हो जो वेद पढ़ा हो, सदाचारी हो, श्रेष्ठ हो, चहुं ओर जिसकी कीर्ति हो दुराचारी न हो व्यभिचारी, मद्यपानी, मांसाहारी न हो। ...

महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी महाराज ने सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में लिखा है 'यथा राजा तथा प्रजा' अर्थात् देश का राजा जैसा होता है प्रजा भी उसका अनुसरण करती है। जब ऋषि दयानन्दजी ने यह बात रखी थी तब देश परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था, अनेक रियासतें उस समय, अनेक राजा व नवाब उस समय मनमानी भी करते थे। राजा-प्रजा वेद विरुद्ध आचरण करते थे। ऋषि दयानन्द ने प्रजा से लेकर राजाओं तक वेद का प्रचार किया। उस समय अनेक विक्रतियां समाज में थीं। वेद ज्ञान व आचरण शून्य प्राय: था। ऋषि का विचार था कि राजा सत्याचरण करेंगे तो प्रजा भी उनका पालन करेगी।

उस समय राज तन्त्र था। प्रजा राजा के पीछे थी सब कुछ राजा ही था। आज उसका उल्टा है। आज प्रजातन्त्र है आज प्रजा ही बी.डी.सी., ग्राम प्रधान ग्राम सभा सदस्य, जिला पंचायत सदस्य, अध्यक्ष, विधान सभा सदस्य आदि चुनती है। कहने का विषय यह है कि जो प्रजा अपना प्रतिनिधि चुनती है वह कैसा होना चाहिए यदि प्रजा के व्यक्ति या प्रतिनिधि सदस्य दुराचारी हो, मद्यपानी हों, मांसाहारी हों, व्यभिचारी हों तो क्या वह एक अच्छा समाज बना पाऐंगे समाज को उन्नति के मार्ग पर ले जा पाएंगे, वह समाज में श्रेष्ठ तो नहीं बन पाएंगे अपितु समाज को गर्त में अवश्य ले जाएंगे। इसी कारण चारों ओर बलात्कार, व्यभिचार, हत्या, दहेज हत्या, घोटाले व अन्य अपराध बढ़ते जा रहे हैं। अपराधों को रोकने वाले अनेक अधिकारी भी मद्य, सुरा-सुन्दरी के चंगुल में पाए जाते हैं रेस्तरां, बार, काकटेल पार्टी आदि में भी जाते हैं। रंगीन रातें काटने वाले क्या अपराधों को कम करेंगे, सुरा सुन्दरी के साथ रंगरेलियां मनाना तो स्वयं में अपराध ही है।

होता यह है कि इन दुष्कर्मों व दुष्कर्मियों का आरम्भ ही चुनाव से हो जाता है। चुनाव के समय पर अनेक स्थानों पर मतदाताओं को मद्यपान कराकर रिझाया जाता है जो मांसाहारी होते हैं उन्हें मांस आदि की दावतें दी जाती हैं।

प्रत्याशी भी मांस व मद्य का प्रयोग करने वाले होते हैं। ऐसे प्रत्याशी कम ही मिलेंगे जो श्रेष्ठ छवि वाले हों, श्रेष्ठ आचरण वाले हों परन्तु प्रत्याशी अधिकांशत: मद्य मांस आदि की दावत में अधिक ध्यान देते हैं, यदि वह श्रेष्ठ आचरण करें करावें, मद्य-मांस, व्यभिचार का प्रयोग न भी करें तो जनता को तो अपना मत देना ही है परन्तु अधिकांशत: ऐसे हैं जो मद्य-मांस आदि से अपनी जीत मानते है और समाज में एक गलत संदेश ही देते हैं, जिससे समाज में अनाचारी, दुराचारी व्यभिचारी बढ़ते हैं। इस समस्या का भी समाधान होना चाहिए।

जब देश स्वतन्त्र हुआ तो हर किसी के हृदय में देश प्रेम की भावना थी। उस समय हमारी भावनाएं उतनी कुत्सित न थीं। अत: कोई भी जो भारत का नागरिक हो चुनाव लड़ सकता था। अब इस पर बैठकर विचार करने की आवश्यकता है। ऋषि दयानन्द ने तो छठे समुल्लास में स्पष्ट कहा है कि राजा वही हो जो वेद पढ़ा हो, सदाचारी हो, श्रेष्ठ हो, चहुं ओर जिसकी कीर्ति हो दुराचारी न हो व्यभिचारी, मद्यपानी, मांसाहारी न हो।

महाराज अश्वपति के दरबार में एक बार कुछ विद्वान आ गये। अश्वपति के आग्रह पर उन्होंने जलपान ग्रहण करने को भी मना कर दिया। इस पर महाराजा ने कहा 'नमस्तेनो जनपदे न कर्दर्यान द्यप:।'

अर्थात् मेरे राज्य में न कोई मद्यपायी है न कोई चोर है न ही दुराचार है और कहीं कोई व्यभिचारिणी नहीं है तो व्यभिचारी कहां। कोई ऐसा नहीं जो हवन-यज्ञ न करता हो। अत: जल ग्रहण कीजिए तब उन अतिथियों ने महाराज अश्वपति के यहां जल ग्रहण किया। ऐसा ही कहा जाता है कि महाराजा हरिश्चन्द्र सत्यवादी थे। उस समय कहावत थी कि 'प्राण जाए पर वचन न जाए' अर्थात् वचन को पूरा करते थे चाहे प्राण ही क्यों न चले जाएं। वचन का अर्थ था कि जो भी बोलते थे, सत्य ही बोलते थे। असत्य का तो नाम ही न था स्वप्न में भी असत्य न होता था। वाणी में सत्यता ही होती थी। महाराजा दशरथ ने कैकेयी को देवासुर संग्राम के बाद वरदान दिया था वह उन्होंने पूर्ण किया इसके फलस्वरूप उन्हें अपने प्राण गंवाने पड़े।

सम्राट अशोक चक्रवर्ती शासक था सत्य से हट कर नहीं चला। सत्य हेतु उसने जीवन समर्पित कर दिया। महाराजा प्रताप ने भी सत्य व धर्म को आजीवन निभाया। देश प्रेम व सत्य से विपरीत आचरण कभी नहीं किया जबकि अनेक राजाओं ने अपने आपको देश व मानवता के शत्रु अकबर के आगे समर्पित कर दिया था इसीलिए आज प्रताप को वीरयोद्धा के रूप में सम्मान से याद किया जाता है।

आज भी हमें अपना इतिहास याद रखने की आवश्यकता है उससे हमें शिक्षा लेनी चाहिए। ऋषि दयानन्दजी ने कोई अलग बात नहीं कही। उन्होंने छठे समुल्लास (सत्यार्थ प्रकाश) में राजा मंत्री, सभासद व सभा और सभापति सैनिक व प्रजा के प्रमुख लक्षण बताए हैं। यदि उनसे अलग अयोग्य लोगों को समाज का प्रतिनिधि बनाने हेतु टिकट दिया जाएगा तो व्यभिचार व दुर्गुण तो फैलेंगे ही समाज का प्रदूषण बढ़ेगा। पक्षपात, असत्य व अन्याय बढ़ेगा इसके लिए कोई समाधान होना चाहिए। दुराचारी, व्यभिचारी, मांसाहारी, मद्यहारी मद्यपानी को चुनाव से दूर रखा जाये जो श्रेष्ठ हो वही मत का प्रयोग करे और श्रेष्ठ जनों को ही प्रत्याशी हेतु मान्यता होनी चाहिए। यदि श्रेष्ठता की जांच कोई पैमाना न हो तो सभी के लिए शिक्षा का एक समान व कठोर नियम होना चाहिए जैसा कि वैदिक काल में था। कोई भी वैदिक शिक्षा से वन्चित न रहे। सभी को सदाचार आचार अनाचार का ज्ञान हो। सत्य व न्याय की परीक्षा में खरे उतरें। शिक्षा ही मानव का मूल है और वह है वैदिक शिक्षा, वैदिक शिष्टाचार जिसे वाल्यावस्था से ही प्रत्येक को हृदयांगम करा देनी चाहिए जिससे बालक-वालिका जीवन में सदाचारी हों।

आज स्वतन्त्रता मिले अड़सठ वर्ष हो गए परन्तु शिक्षा की ओर ध्यान जैसा होना चाहिए वैसा नहीं दिया गया आज विद्यार्थियों में भौतिकवाद, कुटिल भावनाएं, मलिनताएं आती जा रही हैं। शिक्षक भी अधिकांशत: मर्यादाओं से मुंह मोड़ रहे हैं। विद्यार्थी व शिक्षक भी आज कहीं-कहीं मद्य-मांस गुटका, धूम्रपान, हेरोइन आदि तक का प्रयोग कर रहे हैं। विश्वविद्यालय व छात्रावासों में, अनेक स्थानों पर आपराधिक घटनाएं होती पायी गयी हैं। शिक्षा के क्षेत्र में नशा मद्यपान, धूम्रपान जैसा तो होना ही नहीं चाहिए। इसके विपरीत श्रेष्ठ आचरण वाली शिक्षा वैदिक शिक्षा से जोड़ना चाहिए क्योंकि इसी से समाज अच्छे शासक, प्रशासक, अधिकारी व प्रतिनिधि दे पाएगा तभी व्यभिचार, दुराचार, यौनाचार, घोटाले आदि का कलंक दूर होगा। **-बिजेन्द्र पाल सिंह, खुर्जा**

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित पत्र

कैसा कठोर अनुशासन चाहते थे ऋषि दयानन्द जी आर्यसमाज में?

यह जानने के लिए मुरादाबाद के श्री दुर्गाचरण जी एवं श्री श्यामसुन्दरदास जी साहु को जोधपुर से 3 जून 1883 को लिखा गया उनका निम्नलिखित पत्र द्रष्टव्य है।

मूल पत्रः

श्रीयुत प्रधान दुर्गाचरण आदि तथा श्रीयुत श्यामसुन्दर जी, आनन्दित रहो ।

कार्ड आपका आया, समाचार विदित हुआ । जो प्रधान और पुस्तकाध्यक्ष जो कि आर्यसमाजों के उद्देश्यों के विघ्न थे, पृथक् कर दिये गये । बहुत अच्छी बात हुई। अब आपका समाज उन्नतिशील होगा और यही बात 'देशहितैषी' और 'भारत सुदशा प्रवर्त्तक' तथा मेरठ और लाहौर के समाज के पत्रों में छपवा दीजिये और आगे को कोई समाज के उद्देश्यों से विरुद्ध आचरण, भाषण करे, उसको एक-दो बार समझा दीजिए और न समझे तो इसी प्रकार पृथक् करते रहिये और अब वैदिक यन्त्रालय में आपके समाज के 100 रुपए लगे हैं और 10 रुपए के पुस्तक वैदिक यन्त्रालय से मंगवा लीजिये अथवा 110 रुपए ही के पुस्तक मंगवा लीजिये और सब सभासदों से मेरा आशीर्वाद कह दीजियेगा। धन्यवाद !

मि. ज्ये. शु. 1 सं. 1940 बुधवार, जोधपुर।

हस्ताक्षर-दयानन्द सरस्वती

(सन्दर्भ ग्रन्थः 'ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन', पृष्ठ 426-427, पत्र 455, द्वितीय संस्करण, 1955 ई., सम्पादक श्री पण्डित भगवद्दत्त जी, प्रस्तुति - भावेश मेरजा)

वानप्रस्थ साधक आश्रम, रोजड़, गुजरात में प्रवेश प्रारंभ

वानप्रस्थ साधक आश्रम, रोजड़, गुजरात के 'संस्कृत व्याकरण, उपनिषद् एवं दर्शन अध्यापन केन्द्र' में ब्रह्मचारियों को प्रवेश दिया जा रहा है। गुरुकुलीय दिनचर्या, पूर्ण अनुशासन, योगाभ्यास व अध्यात्म में रुचि रखने वाले ब्रह्मचारी ही प्रवेश के लिए सम्पर्क करें।

-आचार्य, 91-02770-287417, 09427049550

शोक समाचार श्री रामफल सिंह आर्य को भ्रातृ शोक

गत दिनों हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री रामफल सिंह आर्य के बड़े भाई 66 वर्षीय श्री महेन्द्र सिंह का अचानक देहावसान हो गया। इससे पूर्व उनकी इकलौती बहन का भी निधन हो गया था।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य संदेश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

पृष्ठ 1 का शेष ''अन्तर्राष्ट्रीय आर्य ...

संगठन में एकरूपता नहीं थी किन्तु सम्मेलन की तैयारी व सब आर्यजनों को संगठित करने का कार्य सार्वदेशिक सभा द्वारा किया गया। सम्मेलन से 7 माह पूर्व आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, फिजी का दौरा किया गया। दौरे में सभामन्त्री श्री प्रकाश आर्य, साथ ही उपमन्त्री श्री विनय आर्य तथा वर्तमान कार्यक्रम संयोजक श्री योगेश आर्य (आस्ट्रेलिया) थे।

आस्ट्रेलिया में सिडनी, मेलबर्न, ब्रिसबर्न के आर्यों की अलग-अलग स्थान पर बैठकें लीं। उन्हें इस सम्मेलन के महत्त्व और होने वाले लाभों से अवगत करवाया। इसी कार्य हेतु न्यूजीलैण्ड और फिजी देशों में भी जाकर वहां कई व्यक्तियों से मिले, कई बैठकें लीं, कुछ आपसी मनभेद भी थे। उसका निराकरण किया गया। सभी ओर से सम्मेलन को पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन प्राप्त हुआ। सार्वदेशिक सभा द्वारा 15000/- आस्ट्रेलियन डॉलर सब आर्यजनों के सहयोग से प्रदान किए गए जिससे आयोजकों में एक नव चेतना का संचार हो गया और कल्पना से अधिक बहुत ही भव्य व सार्थक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम में 12 देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। लगभग 1100 से अधिक आगन्तुकों का पंजीयन हुआ। यह इस क्षेत्र के तीनों देशों के लिए पहला अवसर था।

आयोजन के पूर्व आचार्य आशीष जी 2 माह पूर्व से ही आस्ट्रेलिया में रहे, वहां अनेक परिवारों को उपदेश दिया, मांसाहार छुड़वाया, नए व्यक्तियों को आर्य समाज से जोड़ा तथा सम्मेलन में उपस्थित होने की प्रेरणा दी। आपका यह प्रयास अत्यन्त लाभकारी सिद्ध हुआ।

इसी भावना से आचार्य सनतकुमार जी भी कार्यक्रम के पहले ही आस्ट्रेलिया पहुंचे थे और उनकी भी महत्त्वपूर्ण भूमिका इस सफल आयोजन में रही।

पूरे कार्यक्रम में सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि सैंकड़ों नवयुवक, नवयुवतियों, बालकों, किशोरों ने भाषण, प्रश्नोत्तर, नाटक व भजनों की प्रस्तुति में भाग लिया तथा कार्यक्रम स्थल पर सेवा कार्य में जुटे रहे।

पूरे सम्मेलन में वैदिक धर्म के गंभीर मुद्दों पर, वैदिक धर्म परिचय, यज्ञ का वैज्ञानिक स्वरूप, महिला सम्मेलन, शाकाहार पर भाषण, तथा संगठनात्मक स्वरूप पर विभिन्न विद्वानों ने बहुत ही सरल, हृदयग्राही, प्रभावी व्याख्यान व प्रवचन दिए।

इनमें प्रमुख रूप से डॉ. सतीश प्रकाश (अमेरिका), आचार्य आशीष जी, आचार्य सनत कुमार जी, डॉ. सत्यपाल सिंह जी, के अतिरिक्त न्यूजीलैण्ड, फिजी व स्थानीय वक्ताओं ने अपने उद्बोधन दिये।

सम्मेलन में सिंगापुर, सूरीनाम, हॉलैण्ड, मॉरीशस, न्यूजीलैण्ड, फिजी, अमेरिका, नेपाल, इंग्लैण्ड, कनाडा, भारत आदि से लगभग 1500 आर्यजन उपस्थित थे। भारत से लगभग 150 आर्यजनों ने भाग लिया।

जिस प्रकार भारत में पद्मभूषण के पद से सम्मानित किया जाता है वैसे ही- फिजी सरकार द्वारा श्री कमलेश आर्य को, आस्ट्रेलिया सरकार द्वारा डॉ. निहालसिंह जी को, एवं कनाडा सरकार द्वारा हरिकिशन वाश जी को सम्मानित किया गया है, उन्हें सार्वदेशिक सभा की ओर से मंच पर आमन्त्रित कर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का प्रभाव इतना अधिक हुआ कि फिजी, न्यूजीलैण्ड और आस्ट्रेलिया में एक नव जागरण व नव चेतना परिलक्षित होने लगी।

एक क्षेत्रीय संगठन की घोषणा की गई, पेसिफिक आर्य महासम्मेलन के नाम पर तीनों देश मिलकर प्रतिवर्ष एक-एक देश में बड़े स्तर पर आर्य समाज का सम्मेलन करेंगे। किन्हीं कारणों से चल रहे आपसी मतभेदों का भी शमन इस सम्मेलन में हुआ। अब सब मिलकर न्यूजीलैण्ड में 2016 में ऐसा आयोजन करेंगे। इनके साथ अन्य दोनों देश फिजी एवं आस्ट्रेलिया भी सहभागी रहकर कार्यक्रम को सफल बनावेंगे। फिजी की ओर से 2017 में तथा 2018 में ब्रिसबेन (आस्ट्रेलिया) अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन करने का प्रस्ताव सार्वदेशिक सभा को दिया है।

आगामी वर्ष 2016 में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नेपाल में आयोजित किया जाएगा, इसमें आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड एवं फिजी से अनेक आर्यजन भाग लेने आएंगे, ऐसी घोषणा की है।

आयोजन अत्यन्त सफल हुआ, उसका कारण था, आस्ट्रेलिया के अनेक आर्यजन सपरिवार इसकी सफलता में जुट गए थे। यह भी किसी बड़े आयोजन में पहली बार ही देखा गया कि 1000-1200 व्यक्तियों के प्रातः राश और भोजन की व्यवस्था आस्ट्रेलिया के विभिन्न आर्य समाज के सदस्यों ने बारी-बारी से निभायी।

भोजन बनाना, वितरित करना, भोजन कराने की व्यवस्था करना, सफाई करना, यह सब कुछ आर्य समाज में होता देख सभी इस सेवाभाव की भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे थे। नाश्ता व भोजन इतना स्वादिष्ट कि प्रत्येक के मुंह पर उसके संबंध में प्रशंसा के शब्द थे।

कार्यक्रम स्थल की व्यवस्था, साज सज्जा, बैठने की व्यवस्था अत्यन्त आकर्षक व सुविधाजनक थी। 5 एकड़ भूमि पर नवनिर्मित भवन व विशाल मैदान में सब कुछ व्यवस्थित था।

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट की ओर से प्रधान श्री धर्मपाल आर्य द्वारा लगभग 5 लाख रुपए की अंग्रेजी वेद सैट एवं वैदिक साहित्य आस्ट्रेलिया, फिजी एवं न्यूजीलैंड आर्य प्रतिनिधि सभा को भेंट स्वरूप प्रदान की। उन्होंने इस आयोजन में दी जाने वाली दान राशि 15,000/- डालर की पूर्ति हेतु 2000 डालर का सहयोग दिया गया। यात्रा संयोजक एवं सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल जी ने भी 2000/- डालर का सहयोग प्रदान किया।

भारत की ओर से यात्रियों को ले जाने का उनकी व्यवस्था करवाने का बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान श्री आर्य सुरेशचन्द्र अग्रवालजी द्वारा किया गया। आपका स्वास्थ्य यात्रा के 5-6 दिन पूर्व तक ठीक नहीं था, परिवार जन भी न जाने देना चाह रहे थे किन्तु आपने अपनी जवाब देही का निर्वाह करने की भावना से विपरीत परिस्थितियों में भी इस जोखिम को उठाते हुए यात्रियों के साथ यात्रा की और सारी व्यवस्था संभाली। सम्मेलन के पश्चात् भी आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड की यात्रा व्यवस्था करवाई।

सम्मेलन में पहुंचे सभी यात्री अत्यन्त प्रसन्न व संतुष्ट थे। कार्यक्रम प्रातः 7 बजे से रात्रि 9 बजे तक भोजन काल को छोड़कर निरन्तर चलता रहा जिसके प्रत्येक सत्र में श्रोताओं की अच्छी उपस्थिति रही। समय हो जाता परन्तु श्रोता सुनना चाहते थे ऐसा यह पहला ही दृश्य था। कुल मिलाकर इन तीनों देशों में (फिजी, न्यूजीलैण्ड, एवं आस्ट्रेलिया) आर्य समाज के कार्यों हेतु एक नए उत्साह और संगठन का सृजन हुआ है। इसके अतिरिक्त अन्य देशों से आए सदस्यों पर भी कार्यक्रम का अच्छा प्रभाव हुआ है।

योगेश आर्य के साथ ही जगदीश शर्मा, प्रमोद राय, राजेश मलिक, ब्रह्मदत्त खट्टर, राजेश समतुहल, अमर सूद आदि का सपरिवार विशेष सहयोग रहा।

अनेक वक्ताओं अतिथियों मुख्य कार्यकर्त्ताओं के नाम इस रिपोर्ट में सम्मिलित नहीं हो सके हैं। उनके नाम एवं कार्यक्रम के चित्र अगले अंक में प्रकाशित किए जाएंगे।

-प्रकाश आर्य, मंत्री सार्वदेशिक सभा

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा बैठक

रविवार 20 दिसम्बर 2015 प्रातः 11.00 बजे : आर्य समाज हनुमान रोड

सार्वदेशिक सभा के समस्त अधिकारियों, अंतरंग सदस्यों, विशेष आमंत्रित एवं समस्त प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रधान एवं मंत्री महोदयों से निवेदन है कि बैठक में अवश्य ही समय पर पधार कर सभा संचालन में अपना सहयोग प्रदान करें। सभी सदस्यों के भोजन एवं आवास की व्यवस्था आर्य समाज हनुमान रोड में की गई है।

निवेदक :- आचार्य बलदेव (प्रधान) **प्रकाश आर्य** (मंत्री)

संस्कृतम्

आचार्यदेवो भव।

(1. प्रस्तावना, 2. गुरुभक्तेरुपयोगिता लाभाश्च, 3. तदभावे दोषाः, 4. दृष्टान्ताः, 5. उपसंहारः।)

भारतीयशास्त्रेषु गुरोर्माहात्म्यं बहु गीतमस्ति। स ईश्वरस्य प्रतिमूर्तिरिति मन्यते। अत एवोच्यते-'आचार्यदेवा भव' इति। आचार्यो देवतावत् पूज्यो मान्यश्च। यः शिष्येभ्यो विद्यां ददाति, कर्तव्याकर्तव्यं च बोधयति, सदाचारस्य संयमस्य त्यागस्य तपसश्च शिक्षां ददाति, स आचार्यो गुरुवा भवति।

गुरोर्माहात्म्यमेतस्माद् ज्ञायते यद् बालको यदा गुरोः समीपं शिक्षार्थं याति, यज्ञोपवीतं च धारयति, शिक्षां च प्राप्नोति, तदैव स द्विजो द्विजातिर्वा भवति। अन्यथा स शूद्र एव भवति। माता पिता च बालकस्य शरीरमेव सृजतः, गुरुस्तु तं विद्यया शिक्षया दीक्षया कर्तव्योद्बोधनेन च मनुष्यं करोति। अतो मातुः पितुश्च गुरुः गरीयान् भवति। उक्तं च महाभारते-

शरीरमेव सृजतः, पिता माता च भारत।
आचार्यशिष्टा या जातिः, सा दिव्या सा चाऽजऽरा।।1।।

गुरुर्गरीयान् पितृतो, मातृतश्चेति मे मतिः।।2।।

गुरुः भक्त्या सेवया शुश्रूषया च तुष्यति, आज्ञापालनेन तत्कथनानुरूपव्यवहारेण च स प्रीतो भवति। गुरुः यदा प्रीतो भवति, तदा स यत् किंचिदपि जानाति, तत्सर्वं स्वशिष्याय समर्पयितुमिच्छति। अतो विद्याप्राप्त्यै गुरुभक्तेः महती आवश्यकता वर्तते। सत्यमेतदुक्तं च-

गुरुशुश्रूषया विद्या, पुष्कलेन धनेन वा।
अथवा विद्यया विद्या, चतुर्थान्नोपलभ्यते।।3।।

न केवलमेतदेव, अपि तु गुरुभक्त्या मनुष्यस्य चतुर्मुखी उन्नतिर्भवति। उक्तं च-

अभिवादनशील, नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते, आयुर्विद्या यशो बलम्।।4।।

गुरुभक्त्यैव आरुणिः ब्रह्मज्ञः संजातः, एकलव्यश्च महाधनुर्धरो जातः। गुरुशुश्रुषया गुरुभक्त्यैव च कालिदासादयो महाकवयो जाताः, अन्ये च केचन ऋषयो महर्षयः सिद्धाः कलाविदो विविधशास्त्रविशारदाश्च समभवन्। एष गुरुभक्तेरेव महिमा। ये गुरुभक्तिं न कुर्वन्ति, न वा तान् सेवन्ते, तेषां विद्या न प्रकाशते, तेषां यशो न वर्धते, तेषां तेजः क्षीयते, शरीरमायुश्चापि क्षयमुपेतः। ये गुरुभक्ता भवन्ति, तेषां विद्या सदा प्रकाशते, तेषां यशश्च प्रथते, तेषां तेजो विराजते, शरीरमायुश्चापि वृद्धिमेतः। अतः सर्वै सर्वदा गुरुवः पूज्या मान्याश्च।

रचनानुवादकौमुदी

(डॉ. कपिलदेव द्विवेदी)

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन हेतु आज ही अपना ऑर्डर प्रेषित करें या मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

पृष्ठ 1 का शेष

12वां आर्य परिवार ...

के साथ हुआ। इस अवसर पर उपस्थित अतिथियों सर्व श्री अर्जुनदेव चड्ढा राष्ट्रीय संयोजक, ओमप्रकाश आर्य प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री अरूण प्रकाश वर्मा मंत्री, श्री एसपी सिंह संयोजक दिल्ली क्षेत्र, श्री सतीश चड्ढा मंत्री आर्य केन्द्रीय सभा,

कर्नल रविन्द्र वर्मा प्रधान आर्य समाज हनुमान रोड, श्री दयानन्द यादव मंत्री तथा श्री राम प्रसाद याज्ञिक ने दीप प्रज्जवलन किया। श्री एसपी सिंह ने आगन्तुक अतिथियों का परिचय देते हुए माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए श्री राजीव आर्य ने कहा कि इस प्रकार के वैवाहिक परिचय सम्मेलन के माध्यम से विवाह कर नई आर्य पीढ़ी का निर्माण हो रहा है जो वैदिक संस्कारों से युक्त समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण कदम है। इस अवसर पर श्री अरुण प्रकाश वर्मा ने अपने संबोधन में कहा कि समान गुण, कर्म और स्वभाव वाले युवक एवं युवतियों के लिए ये सम्मेलन सशक्त मंच है। इससे संस्कारित भावी जीवन साथी के चयन में सहयोग मिलता है।

कार्यक्रम में अपने विचार को व्यक्त करते हुए श्री कर्नल रविन्द्र वर्मा ने कहा कि दहेज विहीन समाज बनाना आर्य समाज का एक महत्वपूर्ण कार्य रहा है और ये सम्मेलन उसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

सम्मेलन की विस्तृत जानकारी देते हुए राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्ढा ने बताया कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा न केवल दिल्ली अपितु भारत के विभिन्न राज्यों में अब

तक ग्यारह परिचय सम्मेलन आयोजित किये जा चुके हैं। इसी कड़ी में ये 12वां सम्मेलन है। खुशी की बात है कि इन सम्मेलनों के माध्यम से अब तक 685 जोड़े वैवाहिक सम्बन्ध में बंध चुके हैं। आगामी परिचय सम्मेलन 3 जनवरी 2016 रोजड़ (गुजरात) में होगा। 14 फरवरी 2016 को रतलाम (मध्यप्रदेश), 27 मार्च 2016 को जम्मू (जम्मू-कश्मीर) में आयोजित होंगे।

सम्मेलन में महिला संयोजिका श्रीमती विभा आर्या ने कहा कि आर्य युवक-युवतियों को संस्कारवान जीवनसाथी चयन का यह उत्तम प्रयास है। उद्घाटन सत्र के उपरान्त परिचय सम्मेलन में युवक एवं युवतियों ने आत्मविश्वास के साथ मंच पर अपना परिचय दिया। कार्यक्रम के संयोजक अर्जुनदेव चड्ढा ने बताया कि सम्मेलन में जिन युवक एवं युवतियों का पंजीकरण किया गया था उनका मयफोटो/बायोडाटा विवरणिका में प्रकाशित किया गया था। यह पुस्तिका सभी पंजीकृत युवक-युवतियों को निःशुल्क दी गई। इस अवसर पर तत्काल पंजीयन की भी व्यवस्था थी जहां कार्यक्रम स्थल पर ही अनेकों युवक एवं युवतियों ने तत्काल पंजीयन कराया।

सम्मेलन में मंच का संचालन हुए श्री सतीश चड्ढा, श्रीमती विभा आर्य व श्री एसपी सिंह ने किया। सम्मेलन स्थल पर पूछताछ, तत्काल रजिस्ट्रेशन, विवरणिका पुस्तक वितरण युवक-युवती बैज वितरण आदि के पृथक-पृथक काउंटर लगायें गये थे। सम्मेलन में आगन्तुक युवक एवं युवतियों के लिये पृथक-पृथक बैठने की व्यवस्था की गई एवं उन्हें अलग-अलग रंग के बैज दिये गये थे।

जिसकी कमान श्रीमती विभा आर्या, श्रीमती रश्मि वर्मा, श्रीमती पुष्पा महावर ने संभाल रखी थी। वहीं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय के श्री संदीप आर्य, श्री अशोक आर्य, सत्यपाल आर्य, श्री जियालाल आर्य रजिस्ट्रेशन व अन्य व्यवस्थाओं को देख रहे थे। कार्यक्रम स्थल पर उपस्थित परिवारों के आपसी मेल मिलाप कराने हेतु पृथक से व्यवस्था की गई थी जिसमें सर्व श्री सतीश चड्ढा, ओमप्रकाश आर्य, एसपीसिंह, श्रीमती विभा आर्या, श्रीमती रश्मि आर्या, श्री रामप्रसाद याज्ञिक ने कई जोड़ों का मेलमिलाप करवाया।

आर्य समाज हनुमान रोड के प्रधान कर्नल रविन्द्र वर्मा, मंत्री श्री दयानन्द यादव ने आगन्तुक अतिथियों, अभिभावकों, युवक एवं युवतियों का स्वागत करते हुए कहा कि आर्य समाज हनुमान मन्दिर को यह 12वें सम्मेलन के आयोजन का अवसर दिया गया इसके लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का धन्यवाद ज्ञापित करते हैं सम्मेलन में कार्यक्रम स्थल पर ही सभी के लिए चाय, नाश्ता तथा भोजन की व्यवस्था आर्य समाज हनुमान रोड द्वारा निःशुल्क की गई थी।

एस.पी. सिंह,
संयोजक दिल्ली क्षेत्र।

Continue from last issue

Glimpses of the Rig Veda

Shraddha Adoption of Truth In Life

Book X, hymn 151 is gratefully named as 'Sharaddha sukta' the hymn that inspires truthfulnesss and creativity in life.

Shraddha is derived from the word 'Srat' which means Truth. It is on Truth that the divine forces of the Creation as also our social fabric are founded. Shraddha does not import blind faith. It signifies implicit faith in the ultimate, triumph of Truth in our individual and social affairs. In the long run, Truth only prevails. In other words, to have strong belief in the Supreme Lord, who is the source of Truth is Shraddha. That power of Absolute Truth governs the movement of the smallest and the largest objects in the Universe. Man in his disrespectful impudence vaunts to be the arbitrator of his destiny, but there are moments when he finds himself crest-fallen. He, then, realizes that it is not he, but the Supreme Power before whom he is to surrender. The first verse of the hymns reads:

"Sacred fire is kindled by Shraddha or faith, by faith is the devotion or oblation offered. On the height of fortune, we glorify faith with admiration."

Shraddha, thus, is to be understood as firm belief in the Truth underlying the visible and invisible worlds.

श्रद्धयाग्निः समिध्यते श्रद्धया हूयते हविः।

श्रद्धां भगस्य मूर्धनि वचसा वेदयामसि।। (Rv. x.151.1)

Sraddhayagnih sam idhyate sraddhaya huyate havih l

Sraddham bhagasya murdhani vacasa vedayamasi ll

The Seven Codes of Conduct

Wise men have stipulated seven codes of conduct. A person who deviates from any of those codes commits sin. He is a sinner against humanity as he obstructs the progress of society. The rules of conduct for a man are non-violence, truthfuleness, non-possession of others'property, keeping good compny and observing celibacy, cleanliness, self introspection and constant search for the Divine. Not to hinder the progress of oters is non-violence. That wich is changeless and eternal for all times is truth. Not to try or act to own the fruit of the efforts of others and to consume as much as is barely necessary is known as non-stealing. To give up meanness and preserve vigour of life is celibacy. Purification of body, mind and soul is cleanliness. Company with learned men and regular introspection is self study. Eagerness to realize the spirit behind Creation is search for the Divine.

Verily, a person adhering to the established codes of conduct as indicated above, stands as a light-house in his surroundings. He keeps his head high even at the moment of misery and depression. He beomes the ruler of his own body and mind.

सप्त मर्यादाः कवयस्ततक्षुस्तासामेकामिदभ्यंहुरो गात्।

आयोर्ह स्कम्भ उपमस्य नीले पथां विसर्गे धरूणेषु तस्थौ।। (Rv.X.5.6.)

Sapta maryadah kavayas tataksus tasam ekam id abhyamhuro gat l

aror ha skambha upamasya nile patham visarge dharunesu tasthau ll

Soma, Not Sura-the way to Peace and Joy

"Like the winds violently shaking the trees, 'Soma' the devotional love lifts me up, for have I not frequently drunk of the spiritual elixir?

'Soma' in Vedic texts is not to be understood as alcoholic drink. Whereas liquor excites the body and mind of the drunken beyond his control and firmness and in excessive dose, shakes his physical and mental frame, soma on the other hand is the cause of enlightenment and bliss. Soma is vitalizing and Sura is stupefying. Whereas Sura is a beverage to be enjoyed by the wicked drunkards, Soma imparts delight and ensures perfect happiness to the wise. Soma is a conceptual beverage of devotion. The sharers of Sura become victims of a perpetual hell.

' Soma' signifies extreme devotion to God which brings truth (satya), prosperity (Sri) and (Jyotih). On the contrary, Sura signifies untruth, misery and darkness. The source of Soma is the Supreme Reality, seated in our innermost consciousness. It is the immortal juice of love, devotion and dedication.

The divine elixi shatters the earthly impulses of the pious devotee and invigorates his blissful sheaths of the heart. It strengthens his physical organs and mental power.

प्र वाताइव दोधत उन्मा पीता अयंसत।

कुवित्सोमस्यापामिति।। (Rv. X.119.2)

Pra vata iva dodhata un ma pita ayamsata l

Kuvit somasyapam iti ll

To Be Continued...

प्रेरक प्रसंग — लाला जीवनदासजी का हृदय-परिवर्तन

आर्य समाज के इतिहास से सुपरिचित सज्जन लाला जीवनदासजी के नाम नामी से परिचित हैं। जब ऋषि ने विषपान से देह त्याग किया तो जो आर्य पुरुष उनकी अन्तिम वेला में उनकी सेवा के लिए अजमेर पहुंचे थे, उनमें लाला जीवनदासजी भी एक थे।

आप पंजाब के एक प्रमुख ब्राह्मसमाजी थे। ऋषि जी को पंजाब में आमंत्रित करने वालो में आप भी एक थे। लाहौर में ऋषि के सत्संग से ऐसे प्रभावित हुए कि आजीवन वैदिक धर्म-प्रचार के लिए यत्नशील रहे। ऋषि के विचारों की आप पर ऐसी छाप लगी कि आपने बिरादरी के विरोध तथा बहिष्कार आदि की किंचत् भी चिन्ता न की। जब लाहौर में ब्राह्मसमाजी भी ऋषि की स्पष्टवादिता से अप्रसन्न हो गये तो लाला जीवनदासजी ब्राह्मसमाज से पृथक् होकर आर्य समाज के स्थापित होने पर इसके सदस्य बने और अधिकारी भी बनाये गये।

यहां यह उल्लेखनीय है कि जब ऋषि लाहौर में पधारे तो उनके रहने का व्यय ब्राह्मसमाज ने वहन किया था। पता नहीं श्री डॉ. भवानीलालाजी भारतीय ने अपने द्वारा लिखित ऋषि जीवन में किस आधार पर यह लिख दिया कि ब्राह्मसमाजियों ने ऋषि से यह व्यय मांग लिया।

पंजाब ब्राह्मसमाज के प्रधान लाला काशीरामजी और आर्य समाज के एक यशस्वी नेता पंडित विष्णुदत्तजी के लेख इस बात का प्रतिवाद करते हैं।

लाला जीवनदासजी में वेद-प्रचार की ऐसी तड़प थी कि जहां कहीं वे किसी को वैदिक मान्यताओं के विरुद्ध बोलते सुनते तो झट से वार्तालाप, शास्त्रार्थ वा धर्मचर्चा के लिए तैयार हो जाते। पंडित विष्णुदत्तजी के अनुसार वे विपक्षी से वैदिक दृष्टिकोण मनवाकर ही दम लेते थे।

अनेक व्यक्तियों ने उन्हीं के द्वारा सम्पादित और अनूदित वैदिक सन्ध्या सीखी थी।

अपने जीवन के अन्तिम दिनों में पंडित लेखराम इन्हीं के निवास स्थान पर रहते थे और यहीं वीरजी ने वीरगति पाई थी।

राजकीय पद से सेवामुक्त होने पर आप अनारकली बाजार लाहौर में श्री सीतारामजी आर्य लकड़ीवाले की दुकान पर बहुत बैठा करते थे। वहां युवक बहुत आते थे। उनसे वार्तालाप करके आप बहुत आनन्दित होते थे। बड़े ओजस्वी ढंग से बोला करते थे। विचित्र बात तो यह है कि वे व्याख्याता नहीं थे। प्रबन्ध-पटु थे तथापि बातचीत से ही अनेक व्यक्तियों को आर्य बना गये। धन्य है ऐसे पुरुषों का हृदय परिवर्तन।

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

बोध कथा — तेरी इच्छा पूर्ण हो प्रभो!

महर्षि दयानन्द अन्तिम सांस ले रहे थे। सारे शरीर में दर्द था। लोग अशांत थे कि कब क्या होगा। उनके मुखमंडलों पर उदासी थी, आंखों में आंसू। महर्षि ने मुस्कराते हुए कहा-''कौन-सी तिथि है आज? कौन सी घड़ी है इस समय?''

पास खड़े एक व्यक्ति ने बताया कि तिथि कौन सी है, समय क्या हुआ है।

महर्षि बोले-''तो अब खिड़कियों को खोल दो! बाहर की वायु को आने दो! पंछी का मार्ग न रोको! मेरे पीछे आ जाओ सब लोग। गायत्री मंत्र का जाप करो!'' और जब सब लोग जाप कर रहे थे तो महर्षि ने अन्तिम सांस लेते हुए कहा- ''तेरी इच्छा पूर्ण हो प्रभो!'' इसके अतिरिक्त दूसरी कोई प्रार्थना नहीं की, कोई दूसरी याचना नहीं की।

राजी हैं हम उसी में, जिसमें तेरी रज़ा है।

यां यूं भी वाह वा है और वूं भी वाह वा है।।

रणवीर को फांसी के दण्ड की आज्ञा हुई। सैशन जज ने अपना निर्णय सुनाते हुए कहा- ''इसे गले में रस्सी डालकर तब तक लटकाए रक्खा जाये, जब तक प्राण न निकल जायें।'' एक कोलाहल मच गया हर ओर। लोग सहानुभूति के लिए मेरे पास आने लगे-रोनी सूरत बनाकर, उदास चेहरा लेकर। कभी-कभी आंखों में आंसू भरकर वे मेरे पास आते। मुझे हंसता हुआ देखकर आश्चर्य से कहते, ''तेरी छाती में हृदय है या पत्थर? तेरे पुत्र को फांसी की आज्ञा हो गई, उसकी मृत्यु उसके समक्ष खड़ी है और तू अब भी हंसता है?''

तब मैं गंभीरता से कहता-''मुझे अपने ईश्वर पर विश्वास है। यदि मेरा कल्याण इस बात में है कि मेरा रणवीर मेरे पास आ जाय तो संसार की कोई शक्ति उसे मार नहीं सकती और यदि मेरा कल्याण इस बात में है कि वह मेरे पास न आय तो फिर संसार की कोई शक्ति उसे बचा नहीं सकती। तब मैं रोऊं किसलिए?''

तुम्हारी चाही में प्रभो, है मेरा कल्याण।

मेरी चाही मत करो, मैं मूर्ख नादान।।

साभार: बोध कथाएं

नोट: यह पुस्तक सभा के वैदिक प्रकाशन विभाग में उपलब्ध है। प्राप्त करने के लिए मो. 09540040339 पर संपर्क करें।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से

आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलनों का आयोजन : अपने विवाह योग्य बच्चों के नाम पंजीकृत कराएं

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में देश के विभिन्न प्रान्तों के विभिन्न स्थानों पर 11 आर्य परिवार युवक -युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न हुए हैं। इसी शृंखला में आगामी 3 माह में जनवरी 2016 से मार्च 2016 के मध्य 13वें, 14वें, एवं 15वें परिचय सम्मेलनों की तिथियों निश्चित कर दी गई हैं।

आपसे निवेदन है कि आपके स्वयं के बच्चे जो विवाह योग्य हैं अथवा आपके किसी परिचित के बच्चे जो किसी भी आर्य समाज से जुड़े हों, उनको भी यह सूचना पहुंचाकर प्रोत्साहित करें। **फार्म www.thearyasamaj.org** से डाउन लोड किए जा सकते हैं। फार्म की फोटो प्रति भी मान्य है।

13वां परिचय सम्मेलन (गुजरात)
दिनांक 3 जनवरी, 2016
वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ (गुज.)
अन्तिम तिथि 20 दिसम्बर, 2015
संयोजकः सुरेश चन्द्र अग्रवाल-09824072509
सम्पर्क : श्री हसमुख भाई परमार, मो. 09879333348

14वां परिचय सम्मेलन (म. प्रदेश)
दिनांक 14 फरवरी, 2016
आर्यसमाज रेलवे कालोनी, इन्द्रा नगर, रतलाम (म.प्र.)
अन्तिम तिथि 30 जनवरी, 2016
संयोजक : डॉ. दक्षदेव गौड़-09425907070
सम्पर्क : श्री भगवान दास अग्रवाल मो. 08989467396

15वां परिचय सम्मेलन (ज.-कश्मीर)
दिनांक 27 मार्च, 2016
आर्यसमाज बक्शी नगर, जम्मू
अन्तिम तिथि 10 मार्च, 2016
संयोजक : श्री राकेश चौहान- 09419206881

विशेष जानकारी के लिए राष्ट्रीय संयोजक श्री अर्जुनदेव चड्ढा, मो. 09414187428 से संपर्क करें।

आर्य समाज राज नगर पालम कालोनी दिल्ली में एक दिवसीय यज्ञ

आर्य समाज राज नगर पालम कालोनी नई दिल्ली दिनांक 13 दिसम्बर 2015 को एक दिवसीय यज्ञ एवं सत्संग का आयोजन कर रहा है। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य पवनवीर शास्त्री होंगे।

-धर्मेन्द्र आर्य, मंत्री (09868748204)

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा में ऋषि बोधोत्सव का आयोजन

प्रतिवर्ष की भांति आगामी 6 से 8 मार्च 2016 के मध्य महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में ऋषि बोधोत्सव का आयोजन महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा द्वारा आयोजित किया जा रहा है। **-राम नाथ सहगल, मंत्री**

आर्य समाज बिड़ला लाइन्स का 86वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज बिड़ला लाइन्स अपना 86वां वार्षिकोत्सव दिनांक 11 से 13 दिसम्बर 2015 को आर्य समाज प्रांगण में आयोजित किया जाएगा जिसके अन्तर्गत सामवेदीय यज्ञ डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री द्वारा सम्पन्न होगा।

-योगेश कुमार आर्य, प्रधान

आर्य समाज अशोक विहार, फेज़-1 का 42वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज अशोक विहार, फेज-1 का 42वां वार्षिकोत्सव दिनांक 2 से 6 दिसम्बर 2015 के मध्य प्रभाव फेरी के साथ प्रारम्भ हुआ। कार्यक्रम में अथर्ववेदीय यज्ञ एवं प्रवचन डॉ. जयेन्द्र जी के सानिध्य में सम्पन्न हुआ। यज्ञ ब्रह्मा पं. सतीश चन्द शास्त्री थे। विशेष आमन्त्रित अतिथि डॉ. महेन्द्र नागपाल (पू. विधायक), श्रीमती पूनम भारद्वाज (निगम पार्षद) थे। **-जीवन लाल आर्य**

आर्य समाज जहांगीरपुरी का 37वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज मंदिर जहांगीरपुरी का 37वां वार्षिकोत्सव दिनांक 29 नवम्बर 2015 को 11 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य विकास जी तिवारी थे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. उदित राज (सांसद) एवं अजेश जी यादव (विधायक) थे। सांस्कृतिक कार्यक्रम हंसराज मॉडल स्कूल एवं मूर्ति देवी पब्लिक स्कूल के बच्चों द्वारा प्रस्तुत किया गया।

-राम भरोसे, मंत्री

आर्यसमाज द्वारा वैदिक साहित्य का प्रचार

आर्यसमाज खेड़ा अफगान-सहारनपुर एवं वैदिक संस्कृति उत्थान न्यास के सौजन्य से सहारनपुर में पुस्तक मेले में आर्यसमाज द्वारा वैदिक साहित्य का प्रचार किया गया। श्री आदित्य प्रकाश आर्य एवं उनके जोशीले आर्य साथियों द्वारा वैदिक धर्म के नाद को घर घर पहुँचाने के इस महान यज्ञ संकल्प को पूर्ण करने के उपलक्ष पर सकल आर्य जगत द्वारा उन्हें बधाई। स्वामी दयानंद के मिशन में आदित्य जी सरीखे उत्साही कार्यकर्ताओं का योगदान अप्रतिम हैं। **-डॉ विवेक आर्य**

आर्य समाज ए-ब्लाक प्रशान्त विहार का 31वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज ए-ब्लाक प्रशान्त विहार अपना 31वां वार्षिकोत्सव दिनांक 9 से 13 दिसम्बर 2015 को आयोजित कर रहा है। जिसके अन्तर्गत प्रभात फेरी, आर्य महिला सम्मेलन, ऋग्वेद पारायण यज्ञ युवा वैदिक विद्वान आचार्य डॉ. राजू वैज्ञानिकजी द्वारा सम्पन्न होगा।

निवेदक : कृष्ण गोपाल परमार, प्रधान; सोहन लाल मुखी, मंत्री

पंडित गुरुदत्त भवन उद्घाटन समारोहः दिनांक : 23 दिसम्बर 2015

आर्य सामजम् वेल्लिनेली द्वारा संचालितस्य पण्डित ऋषिराम आर्योपदेशक महाविद्यालय नवीन भवनम् 'पण्डित गुरुदत्त भवनस्य' उद्घाटनं स्वामी श्रद्धानन्द महाभागस्य बलिदान दिवसे उपलक्ष्ये अस्मिन् समारोहे भवतां स्वागतम्। अस्य समारोहे शोभा वर्धनार्य आर्य जगतः समादरणीयाः सन्यासी - वानप्रस्थी -आचार्यगणाः आगच्छन्ति। अस्मिन् शुभावसरे भवताम् सान्निध्यं प्रार्थयामहे। **-के.एम.राजन आर्य, अधिष्ठाता**

आर्य समाज शहर सोनीपत बड़ा बाजार का 99वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज शहर बड़ा बाजार सोनीपत का 99वां वार्षिकोत्सव दिनांक 19 से 22 नवम्बर 2015 को वेद पाठ व प्रवचनों विद्वानों के साथ सम्पन्न हुआ। आयोजन को सफल बनाने में आर्य समाज की पूरी कार्यकारिणी, महिला विभाग की सदस्याओं ने सक्रिय भूमिका निभाई। सभा प्रधान श्री सुभाष चांदना ने सभी आगंतुकों का धन्यवाद किया। **-प्रवीण आर्य, मंत्री**

आर्य समाज अंधेरी का 29वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मन्दिर अन्धेरी(प.) मुंबई का 29वां वार्षिकोत्सव दिनांक 24 से 27 दिसम्बर 2015 को आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर 21 कुण्डीय चतुर्वेद शतक महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य वेद प्रकाश जी श्रोतिय होंगे। आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया (राजस्थान) की कन्याओं द्वारा वेदपाठ एवं श्री विजय आनन्द (फिरोजपुर) द्वारा भक्ति संगीत प्रस्तुत किया जाएगा। **-हरीश आर्य, प्रधान**

आर्य समाज रावतभाटा का 49वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज रावतभाटा का 49वां वार्षिकोत्सव दिनांक 22 से 24 नवम्बर 2015 के मध्य सम्पन्न हुआ। प्रतिदिन सांयकाल शंका-समाधान कार्यक्रम रखा गया, जिसे अजमेर से पधारे चिंतक श्री मोहन लाल लस्सानी दोयम ने सम्पन्न कराया। जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा(राज.) के प्रधान श्री अर्जुन देव चड्ढा ने पधार कर सभी विद्वानों को शाल ओढाकर स्वागत किया। श्री उदयवीर सिंह आर्य ने अपने भजनोपदेश से सबके हृदय को झंकृत कर दिया।

-ओम प्रकाश आर्य, मंत्री

आर्य समाज कालकाजी का 64वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज कालकाजी ने अपना 64वां वार्षिकोत्सव 29 नव. से 6 दिसम्बर 2015 के मध्य आयोजित किया गया। जिसके अन्तर्गत ऋग्वेदशतकम् महायज्ञ, बाल प्रतियोगिताएं एवं भक्ति संगीत का कार्यक्रम आयोजित किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य अजय पाल शास्त्री एवं यज्ञोपदेश आचार्य अखिलेश्वर जी महाराज थे। कार्यक्रम के विशिष्ठ अतिथि श्री विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा; मुख्यवक्ता आचार्य अखिलेश्वरजी महाराज, आचार्य महेश विद्यालंकार आचार्य अजय पाल जी शास्त्री थे।

-श्री सुधीर मदान, मंत्री

साप्ताहिक आर्य सन्देश

7 दिसम्बर से 13 दिसम्बर, 2015

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 10 दिसम्बर/ 11 दिसम्बर, 2015
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 9 दिसम्बर, 2015

प्रतिष्ठा में,

कैलेण्डर वर्ष 2016

बढ़िया 130 ग्रा. आर्ट पेपर
20×30 इंच के आकार में
मूल्य 1200/–रुपये सैंकड़ा
आज ही अपने आर्डर बुक कराएं
250 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (200/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150, मो. 09540040339

स्वास्थ्य चर्चा

दांत साफ और चमकदार बनें

1. मसूर की दाल जला कर पीस कर मंजन करें। 2. कीकर का कोयला 50 ग्राम फिटकरी भुनी 20 ग्राम नमक लाहौरी 10 ग्राम पीस कपड़ छानकर मंजन करें।

दांतों में ठंडा पानी लगना

1. सौंठ 20 ग्राम दरदरा कूट कर 200 ग्राम पानी में गेर कर उबालें। आधा रह जाने पर छानकर कम गर्म पानी से कुल्ला करें।

दाढ़, दांत के कीड़े मरें

1. हींग को थोड़ा गर्म कर कीडे के स्थान पर रख कर दबाएं। 2. चिरमिटी की जड़ कान में बांधने से दाढ़, दांत के कीड़ें निकल कर बाहर गिर जाते हैं।

दांतों का मंजन

1. माजूफला, आंवला, हरड़, बहेड़ा, सौंठ, पीपल, काली मिर्च, सैंधा नमक, पतंग, नीला थोथा भूना 10-10 ग्राम कूट छान कर प्रातः सांय 40 दिन मंजन करने से दांत बज्र से बन जाते हैं।

साभार : चिकित्सा सम्राट आयुर्वेद वैद्य खेम भाई द्वारा रचित ''चिकित्सा सम्राट आयुर्वेद'' पुस्तक से साभार यह पुस्तक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वैदिक प्रकाशन विभाग में भी उपलब्ध है। अपना आदेश मो. 09540040339 पर या सीधे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय 15 हनुमान रोड दिल्ली-110001 के पते पर भेज सकते हैं।

आर्य संदेश इंटरनेट पर पढ़े :
www.thearyasamaj.org/article
फेसबुक पर हमसे जुड़ें :
margdrashan@gmail.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2 नारायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, फोन:23360150, 23365959, E-mail: aryasabha@yahoo.com; Web: thearyasamaj.com से प्रकाशित

सम्पादक: धर्मपाल आर्य सह सम्पादक: विनय आर्य व्यवस्थापक: शिव कुमार मदान सह व्यवस्थापक: आर्य डॉ. ओम प्रकाश भटनागर, एस.पी. सिंह